PAGE :
DATE : / /

अभिवृद्धि तथा विकास में अन्तर

अभिवृद्धि –	विकास –
1- अभिवृद्धि का स्वरुप बाह्य हैं।	1- विकास आन्तरिक गुण हैं।
2- अभिवृद्धि विकास का एक अंग हैं।	2- विकास स्वयं में एक पूर्ण प्रक्रिया है जो वृद्धि को स्वयं समेटे रहता हैं।
3- अभिवृद्धि का कोई निश्चित क्रम नहीं हैं।	3- विकास क्रमबद्ध प्रक्रिया हैं।
4- अभिवृद्धि की कोई निश्चित दिशा नहीं हैं।	4- विकास की एक निश्चित दिशा होती हैं।
5- अभिवृद्धि केवल शारीरिक स्तर पर होता है।	5- वह समस्त पक्षों में संयुक्त रूप से होता हैं।

अभिवृद्धि तथा विकास के सिद्धान्त >

गैरिसर तथा अन्य के अनुसार –

" एक बालक विकास की एक अवस्था से दूसरी अवस्था में प्रवेश करता है।

तब हम उसमें कुछ परिवर्तन देखते हैं। अध्ययनों ने सिद्ध कर दिया है कि ये परिवर्तन निश्चित सिद्धान्तो के अनुसार होते हैं।

1- निरन्तर विकास का सिद्धान्त →

इस ~~कुछ~~ सिद्धान्त के अनुसार विकास कि प्रक्रिया अविराम गति से निरन्तर चलती रहती हैं। पर यह गति कभी तीव्र तथा कभी मंद पड़ जाती है। बालको में गुणो का विकाश ~~एकाएक~~ नहीं ~~होता इसका इस लिए~~ इनका विकास सतत रुप में मंद गति से होता रहता हैं।

2- विकास की विभिन्न गति का सिद्धान्त →

अध्ययनों के आधार पर यह निश्चित किया जा चुका हैं। कि विभिन्न व्यक्तियों के विकास की गति भिन्न-2 होती है। जैसे जो बालक जन्म के समय लम्बा होता हैं। वह बड़ा होने पर भी लम्बा रहता है और जो छोटा होता हैं। वह छोटा होता हैं।

PAGE :
DATE : / /

विकास - दिशा का सिद्धान्त →

अभिवृद्धि तथा विकास की अपनी दिशा होती है। वह मस्तकोधोमुखी क्रम का पालन करती है। इसका अर्थ यह हुआ की मानव जीवन सिर से आरम्भ होकर नीचे तक अभिवृद्धि करता है।
सबसे पहले शिर का विकास होता है। बच्चा सबसे पहले शिर की गति करने का प्रचलन करता है। तब वह बैठते है। चलने तथा दौड़ने का प्रयास करता है।

विकास के स्तर →

सभी मानव जीवन में में अभिवृद्धि तथा विकास के विशेष स्तर होते हैं। एक स्तर की विशेषताऐं तथा व्यवहार दूसरे से भिन्न होते हैं। इसलिए शिक्षकों को विभिन्न स्तरों का ज्ञान होना आवश्यक है। विभिन्न स्तरों के वर्गीकरण के सम्बन्ध में विभिन्न विशेषज्ञों ने स्पष्ट किया है।

11/1/22

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया